Acknowledgement

निवेदन

वर्तमान में सांस्कृतिक परिवेश बदल चुका है। व्यक्ति के मानदमूल्यों में भी अंतर आया है, समय की व्यस्तताओं ने व्यक्ति को संकुचित कर दिया है, मनोरंजन और रसग्रहण की परिभाषायें बदल चुकी हैं; फिर भी इस प्रदूषित वातावरण में व अतिव्यस्तता के क्षणों में भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि कम नहीं हुई है। हिन्दुस्तान में तथा अन्य राष्ट्रों में भी शास्त्रीय संगीत के प्रति रुझान बढ़ा है, साथ ही इस संगीत की प्रस्तुतियों में व्यावसायिक नज़रिये के कारण सरलीकरण और संक्षिप्तता का आरोपण हुआ है। "भारतीय (अनर-भारतीय) शास्त्रीय संगीत का भविष्य" इस शोध प्रबंध में प्रथम बार ही इस संबंध में विस्तृत चर्चा की जा रही है।

बदले परिवेश एवं परिवर्तित मूल्यों के कारण शास्त्रीय संगीत के भविष्य के प्रति शंकायें उठी हैं, इसकी लोकप्रियता के ह्रास के अनेक कारणों पर दृष्टि जाती है। इस शोध प्रबंध के माध्यम से मैंने उन संभव परिस्थितियों का विश्लेषित किया है जिससे शोध-प्रबंध की मौलिकता व उपयोगिता बढ़े।

इस संदर्भ में मेरे शोध निर्देशक प्रोफेसर वसंत रानडे जी जो वायलिन वादन के क्षेत्र के देश में चर्चित व्यक्तित्व हैं और जिन्होंने अपने अत्यंत व्यस्त समय में भी मुझे उचित निर्देशन प्रदान करने के साथ समय-समय पर मेरी अनेक समस्याओं का समाधान किया। मैं उनका हृदय से आभार स्वीकार करती हूँ।

इस संदर्भ में सेवानिवृत्त तथा ख्याल गायकी के विद्वान पं. नारायणराव पटवर्धन जी का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने समय-समय पर मेरे अनेक प्रश्नों का हल करने के साथ मुझे हर तरह से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। श्रीमती सरस्वती पटवर्धन ने भी मेरी जो उत्साह वृद्धि की उसके लिये मैं उनकी ऋणी हूँ। श्रीमती वसुधा रानडे तथा रानडे परिवार

के सभी सदस्यों ने भी इस शोध-प्रबंध को पूर्ण करने में समय-समय पर मेरे उत्साह की वृद्धि की है।

चूँकि यह शोध प्रबंध हिन्दी में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसलिये भाषा-शैली एवं प्रस्तुति की दृष्टि से हिन्दी के मानद विद्वान एवं प्रसिद्ध कवि डा. विष्णू विराट जी का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने संपूर्ण शोध प्रबंध की भाषा को रूप देने में मेरी सहायता अपना बहुमूल्य समय देकर की।

मैं अपने पूज्य पिताजी श्री कृष्ण मुरारी अवस्थीजी तथा पूज्य माताजी श्रीमती कृष्णा अवस्थी का भी हृदय से आभार मानती हूँ। उनके प्रयासों के कारण ही मैं यह शोधग्रंथ पूर्ण कर सकी हूँ। इसी तरह मेरे दोनों भाईयों ने भी इस कार्य में जो सहयोग मुझे प्रदान किया उसके लिये मैं उनकी भी आभारी हूँ।

अंत में, इस शोध प्रबंध में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जो भी विद्वान सहायक हुये हैं। जिन-जिन पुस्तकालय अध्यक्षों का मैंने सहयोग प्राप्त किया है उन सबके प्रति भी मैं ऋणी हूँ तथा उन सबके प्रति अपना आभार प्रदर्शित करती हूँ।

कु. संगीत कृ. मु. अवस्थी